Research Paper | Literature | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 4 | Issue : 1 | Jan 2018



VANOTPADAN AUR VANON KI UPYOGITA KA MAHATV AVM PRABHAVON KA ADHAYYAN [MANDLA JILE KE VISHESH SANDRABH ME]

वनोत्पादन ओर वनों की उपयोगिता का महत्व एवं प्रभावों का अध्ययन (मंडला जिले के विशेष संदर्भ में)

Dr. Tulsiram Jadhav

जमरिया फल्या ग्राम, पोस्ट सोलवन, तहसील वरला, जिला, बड़वानी (म.प्र.) 451666.

ABSTRACT

क्षेत्रीय एवं जनजातीय समुदाय वनों से कहीं न कहीं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रहता है। इसलिए इनकी जीवन शैली में वनों का महत्व कहीं अधिक घनिष्ट रूप से तो कहीं आंशिक रूप से संबंध बना रहता है। अतः क्षेत्रीय व जनजातीय समुदाय वन क्षेत्रों से विभिन्न प्रकार की लघु वन उत्पादित वस्तुओं की प्राप्ति कर वाणिज्यिक उद्देश्य की पूर्ति करते रहे है, जैसे – लाख, हर्रा, विभिन्न प्रकार के गोंद, मधुमोम, चिरोंजी, शहद, करोंदा, साल, बहेड़ा, आँवला, जामुन, तेंदू, वनतुलसी, मुसली, सीताफल, रामफल एवं विभिन्न प्रकार के फल, घास, वनौषधि, कन्द, शाक–सब्जियाँ एवं लकड़िया आदि। इन वाणिज्य उपयोगी वस्तुओं के संग्रहोपरान्त इन्हें आसपास के गाँवों अथवा कस्बों के स्थानीय व्यपारियों को बैचा जाता रहा है। साथ ही मवेशियों के लिए चारा, सिर भार जलाऊ लकड़ी आदि की पूर्ति क्षेत्रीय व जनजातीय महिलाओं द्वारा अपने आसपास के गाँवों अथवा कस्बों में बैच कर आंशिक आय प्राप्त करते रहे है। जिससे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती रही है।

मंडला जिले में क्षेत्रीय व जनजातीय समुदायों के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि वर्तमान में वनों में पौधा रोपण, तार फैंशिंग, बाउण्डरी के पिल्लर बनाने, कटे पेड़ों को हटाने, छोटी–छोटी सिरबोझ जलाऊ एवं इमारती लकड़ी लाने, लकड़ी का कोयला लाने, बॉस का समान, बीड़ी व फर्नीचर बनाने, लाख, गोंद, शहद, रेशम उत्पादन, पशुओं के लिए चारा, शिकार तथा कन्द–मूल, फल–फूल व पत्ते–भाजी आदि वनोत्पादनों के द्वारा वनों से प्रत्यक्ष रूप से आय अर्जित की जाती है।

परिचय (INTRODUCTION):

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था एवं जनजातीय अर्थव्यवस्था का सर्वप्रथम गुण इसकी प्राकृतिक वातवरण पर निर्भर थी। दूसरे शब्दों में इनकी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था वन के चारों ओर घूमती रही हैं। अपने सरलतम उपकरणों के माध्यम से तथा बिना किसी बाहरी तकनीकी सहायता के ये अपनी जरूरतों को प्रायः सभी चीजें यथा खाद्य उपयोगी कन्द–मूल, फल–फूल, साग–सब्जियाँ, शहद, कीड़ें, पशु–पक्षी, खरगोश, बन्दर, सुअर, हिरण एवं अन्य नाना प्रकार के जन्तु इत्यादि स्वतंत्र रूप से प्राप्त करते रहे हैं।[1] जिससे उन्हें वनों की उपयोगिता का महत्व का ऐहसास कम होता था, किन्तु वर्तमान एक तरफ बढ़ती हुई जनसंखा, वनोत्पादनों से कच्चे की बड़ती मांगों से वनोआधारित व्यवसायों में वृद्वी हुई, वही दुसरी ओर सरकारी वन संरक्षण कानून एवं योजनाओं के चलते क्षेत्रीय व जनजातीय समुदाय में उनकी वनोआधारित आवश्यकताओं की पूर्ति एवं व्यवसायों को परिसिमित कर दिया है जिससे वनों की उपयोगिता का महत्व और भी बड़ जाता है।

शोध समस्या का चयन (SELECTION OF RESEARCH PROBLEM):

क्षेत्रीय व जनजातीय समुदाय के जीवन में वनों का महत्व वन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है, क्षेत्रीय व वन्य जातीय अर्थव्यवस्था तथा कृषि वनों के साथ काफी गहराई रूप से जुड़ें हुए है। खाद्य पदार्थ, ईंधन, ईमारती लकड़ी, घरेलू सामग्री, जड़ी–बूटी तथा पशु चारा, शिकार, कृषि व कृषि उपकरण इत्यादि के लिए क्षेत्रीय व वन्य जाति तथा जनजातियाँ वनों पर ही निर्भर रहे है। वही दुसरी और वनोत्पादनों की मांग वृद्वी के साथ–साथ सरकारी वन संरक्षण कानून एवं योजनाओं के चलते वनोत्पादन क्षेत्र सिमित होने लगा जिससे क्षेत्रीय व जनजातीय समुदाय में पारिवारिक एवं सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को बचाने लिए वनों का महत्व बढ़ जाता है जिसका समाजस्य स्थापित हो सके? इन महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही **''वनोत्पादन ओर वनों की उपयोगिता का महत्व एवं प्रभावों का अध्ययन''** (**मंडला जिले के विशेष संदर्भ में**) नामक शोध समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य (OBJECTIVE OF STUDY):

1. क्षेत्रीय व जनजातीय समुदाय में वनों का महत्व एवं प्रभावों का अध्ययन करना।

2. क्षेत्रीय व जनजातीय समुदाय में वनों की बड़ती हुई उपोगिता के समाजस्य अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व (IMPORTANT OF STUDY):

क्षेत्रीय एवं जनजातीय विकास में वनों का योगदान प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण है। वनों के विकास से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि होगी है और लोगों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। उनका सामाजिक जीवन, रहन–सहन आदि सभी में परिवर्तन होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है, कि जिन क्षेत्रों में वनोत्पादन के घटने, सरकारी अधिनियमों के लागू होने एवं शिकार पर प्रतिबंध लगाने से उनके जीवन स्तर में क्या परितर्वन हुआ है? वन अधिनियमों से क्षेत्रीय विकास में क्या प्रभाव हुआ है? घटते वनों को कैसे बचाया जा सकता है? वन संरक्षण से क्या–क्या महत्व है? उनका पता लगाना और समाधान खोजने का प्रयास किया गया है।

निदर्शन प्रक्रिया (SAMPLING PROCESS):

अध्ययन के समग्र (Univers of study) के रूप में मंडला जिले की सभी तहसीले, मंडला, निवास बिछिया व नैनपुर को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक तहसील से 5–5 गांवों का चयन ग्रामों में वनों का क्षेत्रफल तथा वनों पर निर्भर जनसंख्या के आधार पर सोद्देश्य प्रतिचयन विधि2 से चयन किया गया है। इन चयनित कुल गाँवों मे से प्रत्येक चयनित गाँव से देव निदर्शन विधि द्वारा 20–20 परिवारों को अध्ययन की इकाईयों में सम्मलित किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु परिवार के मुखिया का साक्षात्कार किया गया मुखिया से साक्षात्कार के दौरान विकासात्मक कार्यक्रमों से वनोत्पादनों से उनकी आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में आये बदलाव वनों से प्राप्त संसाधन का विपणन आदि जानकारियाँ एकत्र की गई है।

समंक संकलन के स्त्रोत (SOURCE OF DATA COLLECTION):

इस अध्ययन हेतु प्राथमिक आँकड़ों (Primary data) का संकलन का साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन, समूह चर्चा आदि के माध्यम से किया गया है तथा द्वितीयक समंकों (Secondary data) का संकलन विभिन्न मानक पुस्तकों, शोध प्रबंध, संदर्भित पुस्तकों, शोध–पत्रों, जिला गजेटियर पुस्तक, जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, भारतीय जनगणना, विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय कार्यालयों के प्रतिवेदनों, सरकारी समितियों के प्रतवेदनों आदि के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष (FINDINGS OF STUDY):

क्षेत्रीय एवं जनजातीय समुदाय वनों से कहीं न कहीं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रहता है। इसलिए इनकी जीवन शैली में वनों का महत्व कहीं अधिक घनिष्ट रूप से तो कहीं आंशिक रूप से संबंध बना रहता है, इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न प्रकार है–

1. अध्ययन क्षेत्र में वनों में मजदूरी जैसे – तेंदूपत्ता तोड़ने, बरसात के मौसम में पौधारोपण, अन्य समय कटे पेड़ों को हटाना, पुराने वृक्षों की कटाई करना, वनों में तारा फेंसिंग, सड़क निर्माण आदि कार्यों से क्षेत्रीय व जनजजातीय समुदायों में जीवन निर्वाह के लिए सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि पाई गई है जिसके कारण क्षेत्रीय एवं जनजातीय समुदायों में वनों का महत्व बड़ जाता है।

2. अध्ययन क्षेत्र में पूर्व में विक्रय हेतु चिरौंजी, महुआ–गुली, कंद–मूल, फल–फूल, इमारती लकड़ी, आंवला, शहद, हर्रा बहेरा, भिलवा, जडी बूटियां, लाख गोंद, क्षेत्रीय एवं जनजातियों को जंगल से प्राप्त होती है जो उसकी आय का मुख्य स्त्रोत है जिसका वर्तमान वनोत्पदन के मूल्य में वृद्धि से सर्वेक्षित परिवारों की वार्षिक आय में वृद्धि पाई गई है।

3. अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में जंगलों में पशुओं के चारा पाप्त होने के कारण पशुओं से वार्षिक सर्वाधिक 5,000 रू. प्राप्त करने वाले 31 प्रतिशत पाये गये, वही दुसरी ओर प्राकृतिक वातवरण एवं पर्यावरण संरक्षाण वनों का महत्व बड़ जाता है।

इस प्रकार इस विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय व जनजातीय समुदायों में नई आवश्यकताओं के संदर्भ में उनकी बढ़ती हुई नगदी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वनोपज का महत्व और बड़ गया।

उपसंहार (CONCLUSION):

उक्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय व जनजातीय समुदायों में वनोत्पदान एवं वनों की उपयेगिता बड़ने से वनों का सदउपयोग होने लगा है। जिससे कारण वनों की अंधाधुद कटाई एवं वनों के दहन पर नियंत्रण में सफलता मिली है।

संदर्भ (REFERENCES):

1. उपाध्याय, विजय शंकर, शर्मा, विजय प्रकाश 2007 ''भारतीय जनजातीय संस्कृति'' मध्यप्रदेश हिन्दी भोपाल, पृ. क्र. 23
2. सिंह, श्याम (1982), वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, कमल प्रकाशन, इन्दौर पृ. 278–79.